नाम – सरिता शर्मा
मो0नं0 – 7380731702

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की एक अपनी भूमिका होती है जैसे पढ़ाई में लोग अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की एक अलग भूमिका होती है हर एक युवा की अपनी–अपनी अलग अलग अलग होती है अपने लक्ष्य की आने के लिए उस लायक बनना पड़ता है ज्यादा से ज्यादा मेहनत करना पड़ता है युवाओं की भूमिका अपनी अपनी अलग अलग होती है अलग अलग पढ़ाई की जाती है अलग–अलग कॉलेज होते हैं अगर हमें कुछ बनना है तो कुछ पढ़ाई के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए तभी हम कुछ बन पाएंगे अगर कोई युवा कुछ बनना चाहता है और उसके पास पैसा नहीं है फिर वह अपने लक्ष्य को पाना चाहता है तो वह कैसे बने और उसके माता–पिता साथ दे रहे हैं तो वह मेहनत करके बनता है सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका उसी प्रकार होती है जिस प्रकार वह अपने लक्ष्य को पाना चाहता है।

पढ़ाई के क्षेत्र में युवाओं की भूमिका–

पढ़ाई के क्षेत्र में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है हर व्यक्ति अपने अपने लक्ष्य को पाने के लिए अपनी अपनी भूमिका निभाते हैं हमारा मनजीत काम में लग रहा है हमें वही करना चाहिए अगर हमारा मन पढ़ाई में लग रहा है तो पढ़ाई करो अगर नहीं मन लग रहा है तो मत करो क्योंकि किसी भी व्यक्ति से कोई भी काम जबरदस्ती नहीं करवाया जा सकता है कहने का तात्पर्य यह है कि जिस का जिस काम में मन लगे उसे वही करना चाहिए अगर हमें अपने माता–पिता का नाम

रोशन करना है तो सिर्फ अपने आप को देखो दुनिया कैसी है इस से मतलब ना रखो केवल अपने लक्ष्य को देखो हमारे जीवन में सफलताएं पाना बहुत जरूरी होता है।

हमारे जीवन में सफल होना बहुत मायने रखता है सफलता एक ऐसी चीज है जिसे पाने के बाद हमारा मन उत्साहित हो जाता है और हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है अगर कोई व्यक्ति बार–बार असफल हो रहा है तो वह उसके आगे ना बढ़ने का कारण बन जाता है इसलिए सफलताएं बहुत जरूरी हैं हमें अपनी बोलचाल यह विशेष ध्यान देनी चाहिए तभी हम आगे बढ़ सकते हैं।